'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ११७ | वाराणसी, मंगलवार, १३ अक्टूबर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

सांबा (जम्मू-कश्मीर) १५-९-'५९

सोचिये, मनुष्य के नाते आपका कर्तव्य क्या है ?

आपका गाँव एक बड़ा गाँव है। यहाँपर मैं एक दफा आ चुका था। आज कश्मीर-यात्रा की वापसी में फिर यहाँ आना हुआ है। ऐसे दुबारा आना बहुत ही कम गाँवों में होता है।

कहने लायक काम नहीं हुआ

आज सुबह यहाँके कुछ भाई हमसे मिलने आये तो हमने उनसे एक सादा-सा सवाल पूछा कि साढ़े तीन महीने पहले हमने यहाँपर कुछ बातें कही थीं तो क्या यहाँ कुछ काम हुआ है ? उन्होंने कहा, जी नहीं, कुछ नहीं हुआ। इसके मानी क्या हैं ? क्या इन साढ़े तीन महीनों में लोगों ने खाना नहीं खाया ? खेलनेवाले लड़के नहीं खेले ? क्या लोगों ने रात को नींद नहीं ली ? क्या खेतों में कुछ भी काम नहीं किया गया ? हवा चलती है। बारिश बरसती है। मोटरें इधर-उधर दौड़ती हैं। जन्म पानेवाले जन्म पाते हैं, मरनेवाले मरते हैं। उनके दहन का या दफन का इन्तजाम किया जाता है। यह सब चलता है तो यह सब भी काम में ही गिना जायगा। काम याने कुछ-न-कुछ करना। वह तो दुनिया में चलता ही है। भगवान ने गीता में यहाँ तक कह डाला है कि काम किये बगैर कोई एक क्षण भी नहीं रहता। फिर भी जब पूछा जाता है तो ना कहना पड़ता है। इसके मानी यह है कि कहने लायक काम नहीं हुआ। जिससे इन्सान के दिल को तसल्ली होती है, ऐसा कोई काम नहीं हुआ।

मनुष्य सिर्फ प्राणी नहीं है

इन्सान के दिल को सिर्फ खाना-पीना मिलने से तसल्ली नहीं होती है। यह बात ठीक है कि खाना-पीना न मिले तो बेचैनी रहती है। इसलिए शरीर को कम-से-कम जितना भोग चाहिए, उतना मिलना चाहिए। लेकिन उतने से इत्मीनान, संतोष, तसल्ली, अन्तःसमाधान का अनुभव नहीं होता। इन्सान सिर्फ एक प्राणी नहीं है। उसमें प्राणी का एक अंश पड़ा है, क्योंकि प्राण है। भूख, प्यास आदि जो सामान्य प्राणी के लक्षण हैं, वे सब मनुष्य में हैं, परन्तु मनुष्य सिर्फ प्राणी नहीं है, जिसमें प्राण मुख्य वस्तु है, वह प्राणी कहलाता है—मनुष्य की मुख्य वस्तु प्राण नहीं है। मनुष्य का मतलब है मनन करनेवाला, विचार करनेवाला। यद्यपि साँस चलती है या नहीं, इसीपर से यह पहचाना जाता है कि मनुष्य जिन्दा है या मरा है। लेकिन उसपर से भी इतना ही मालूम होता है कि प्राणी के नाते वह जिंदा है या मरा है। इन्सान के नाते वह जिन्दा भी हो सकता है और नहीं भी हो सकता। किसीके नाक से साँस न चलती हो तो माना जायगा कि प्राणी के नाते वह मर गया। लेकिन फिर भी संभव है कि मनुष्य के नाते वह जिन्दा हो। कई महापुरुष ऐसे हैं, जो प्राणी के नाते मर गये हैं, लेकिन मनुष्य के नाते आज भी जिन्दा हैं। आज जो मनुष्य जीवित हैं, उनमें सभी मनुष्य के नाते जिंदा हैं, ऐसा नहीं कहा जायगा।

वे जिन्दे हैं !

हमने भाइयों से पूछा कि क्या आपके गाँव में कोई पुस्तकालय है ? जवाब मिला, हाँ। यहाँ एक पुस्तकालय है। जिसमें करीब चार-पाँच सौ पुस्तकें होंगी। जब हमने पूछा कि विद्यार्थियों की पुस्तकों के अलावा लोगों के घर-घर में कितनी पुस्तकें होंगी ? जवाब मिला, हजारों ! सिखों के घर में जपुजी, ग्रंथसाहब वगैरह किताबें होंगी। हिन्दुओं के घर में गीता, तुलसी रामायण वगैरह होंगी। अब सवाल यह है कि लोग जपुजी, रामायण वगैरह किताबें क्यों पढ़ते हैं ? ये किताबें किन्होंने लिखी हैं ? जिन्होंने ये किताबें लिखी हैं, वे आज मौजूद नहीं हैं। तुलसीदास ४०० साल पहले हुए थे और गुरु नानक करीब ५०० साल पहले हुए थे। इतने पुराने जमाने के पुरुषों की किताबें लोग इसलिए पढ़ते हैं कि वे आज भी जिंदा हैं। मरे नहीं हैं। देह से मरे हैं, लेकिन फिर भी वे जिंदा हैं। उन्होंने एक ऐसी चीज दी है, जो समाज को कायम के लिए मदद करेगी।

चार पाँव और एक पूँछवाला जानवर है घोड़ा। वह अपने-को इसी शरीर में सीमित मानता है। नजदीकवाले घोड़े से अपने को अलग मानता है और गधे से अपने को और भी अलग मानता है। वह मर जाने के बाद उसके खयाल में वह मर ही जायगा। उस अकेले को जो एक शरीर मिला है, वह खत्म हो जायगा। उसी तरह जो मनुष्य समझेंगे कि हम हमारे इस एक शरीर के साथ ही जुड़े हुए हैं, इसलिए हम सिर्फ अपने खाने-पीने और शरीर से पैदा हुए बच्चों की ही फिक्र करना, इतना ही काम करेंगे तथा यह शरीर और शरीर के साथ जुड़ा हुआ जीव ही

www.vinoba.in

हमारा विस्तार है, ऐसा समझेंगे तो मर जाने पर उनका क्या हाल होगा, किसीको मालूम नहीं। ऐसे ही लोग मरते समय रोते हैं। महापुरुष मरते हैं तो उनकी आत्मा व्यापक बनती है और सहस्र शरीरों में जाकर प्रेरणा देती है। वे कोई ग्रंथ लिखें या न भी लिखें तो भी उनकी आत्माएँ प्रेरणा देती हैं। तुलसीदासजी ने और गुरु नानक ने ग्रंथ लिखे, इसलिए वे जिंदा हैं, ऐसी बात नहीं है। जिन्होंने ग्रंथ नहीं लिखे, ऐसे महापुरुषों की आत्मा भी उनका शरीर छूटने पर अनेक शरीरों में घुसकर मनुष्यों को हिलाती है, डुलाती है, घुमाती है, बेचैन करती है और यह खयाल पैदा करती है कि क्या खाने-पीने से और बच्चे पैदा करने से मनुष्य को तसल्ली होगी? महापुरुष हमारे शरीर में दाखिल होकर हमें चाबुक लगाते हैं कि अरे प्राणी, तुम पशु नहीं हो, तुम मनुष्य हो। मनुष्य के नाते जो फर्ज है, उसे अदा करो।

'मनुष्य' की विशेषता

हमारी एक लड़की हमसे कहती थी कि कश्मीर में आप उर्दू बोलने की कोशिश करते है, लेकिन 'मनुष्य' शब्द को छोड़ते नहीं हैं। यह 'मनुष्य' शब्द हिन्दी या उर्दू में इस्तेमाल नहीं किया जाता है। मैं कहना यह चाहता हूँ कि मनुष्य में जो खूबी, खुसूसियत, विशेषता है, वह मनुष्य शब्द ही बताता है। मनुष्य याने मनन करनेवाला, सोचनेवाला, जो उसकी विशेषता है। खाना-पीना, भोग भोगना, बच्चे पैदा करना, बीमार पड़ना और मर जाना, यह प्राणीमात्र के साथ जुड़ी हुई चीज है, इसलिए मनुष्य के साथ भी जुड़ी हुई है, लेकिन वह मनुष्य की खुसूसियत नहीं है। इतने से मनुष्य की कभी तसल्ली नहीं हो सकती है। जिसके घर में खाने की चीजें पड़ी हैं, वह भी एकादशी या मुहर्रम के रोज फाका करता है। क्या आपने कोई जानवर देखा है, जो एकादशी के दिन फाका करता है? पेट बिगड़ा या खाना नहीं मिला तो जानवर फाका करेगा। उसी दिन उसकी एकादशी हो जायगी। लेकिन पेट में भूख है, घर में अन्न भरा पड़ा है, फिर भी आज एकादशी है, इसलिए मैं नहीं खाऊँगा, भगवान का नाम लेकर थोड़ा चिंतन, मनन करूँगा, ऐसी बात मनुष्य ही करता है। फाका करने से उसे तसल्ली होती है। त्याग करने में, दूसरे के लिए कुछ काम करने में उसे तसल्ली मालूम होती है। मनुष्य फाँसी के तख्ते पर भी खुशी से चढ़ता है। दुनिया की सेवा में मैं मर रहा हूँ, यों सोचकर खुश होता है। कितने ही फकीर घर छोड़कर घूमते हैं। स्वामी रामतीर्थ ने कहा था "घूमते हैं योगी दर-दर मुझमें-मुझमें" इसके मानी यह हैं कि वे महसूस करते थे कि मेरी आत्मा इतनी फैली हुई है कि दुनिया में घूमनेवाले सब योगी मुझीमें घूमते हैं।

क्या घूमनेवाले फकीर को और जेल जानेवाले कार्यकर्ता को कोई तकलीफ नहीं होती है। रोज सुबह उठने तथा बारिश, धूप, ठंड में घूमने से शरीर को तकलीफ नहीं होती है, ऐसी बात नहीं है। लेकिन शरीर को तकलीफ होने पर भी अन्तःकरण में समाधान रहता है। आपने ऐसा कौन सा जानवर देखा, जिसे तकलीफ में भी समाधान मालूम होता हो? मनुष्य शब्द में यह जो सारी खूबी है, उसीके कारण मैं मनुष्य शब्द को छोड़ता नहीं हूँ।

हम चोला नहीं हैं

हमें समझना चाहिए कि हम मनुष्य हैं याने पशु या प्राणी नहीं हैं। हमें सोचने का हक है। हमें सोचना चाहिए कि हमने यह चोला क्यों पहना है? हम चोला नहीं हैं, परन्तु हमने किसी उपयोग के लिए यह चोला पहना है। हमारे पास सूत कातने के लिए चरखा है, उसे तेल देना पड़ता है। लेकिन उसमें हम बोतलें भर-भरकर तेल नहीं डालते। आज दीवाली है तो चरखे में चमेली का इत्र डाला, आज होली है तो चंदन का तेल डाला, इस तरह हम नहीं करते हैं। बल्कि चरखे में दो बूँद तेल डालते हैं। चरखे का काम तेल खाना नहीं है। उसका काम है सूत कातना। चरखे को तेल देना पड़ता है, इसलिए हम थोड़ा-सा देते हैं, उसी तरह मानव देह खाने-पीने के लिए नहीं है। उसे खाना देना पड़ता है। हमने मानव-देह रोटी खाने के लिए नहीं धारण किया है। इस चोले का कोई उद्देश्य, प्रयोजन, मक़सद है। क्या इस मक़सद से हमने कोई काम किया है? अगर नहीं किया हो तो कुछ नहीं किया, ऐसा जवाब देना पड़ेगा। आज सुबह यहाँके भाइयों ने हमें जो जवाब दिया, उसके मानी यह है कि मनुष्य कहने लायक हमने कुछ काम नहीं किया। वैसे किसी व्यक्ति ने काम किया भी होगा, लेकिन सारे गाँववालों ने मिलकर समूह के तौर पर ऐसा कोई काम नहीं किया।

इन्सान के दो रूप

आज मैंने यहाँके लोगों से पूछा कि इस गाँव में मुसलमानों के कितने घर हैं? जवाब मिला कि पहले कुछ डेढ़-दो सौ घर थे, लेकिन अब एक घर है। कुछ लोग मारे गये और कुछ लोग भाग गये। बीच में हिन्दुस्तान, पाकिस्तान के बँटवारे के वक्त एक खराब हवा चली थी, जिससे लोगों के दिमाग बिगड़ गये थे। इन्सान अपनी इन्सानियत खोकर हैवान बन गया था। उसी समय यह बुरा काम हुआ। जिन्होंने मुसलमानों को कत्ल किया, उनमें जपुजी, गीता, रामायण पढ़नेवालों में से ही कुछ लोग होंगे, जिनकी उन किताबों पर श्रद्धा भी होगी। ऐसी किताबों पर श्रद्धा रखनेवाले कत्ल कर सकते हैं, क्या यह इन्सान का लक्षण माना जायगा? सोचने की बात है कि शेरों का मुकाबला करने के लिए इन्सान ने तलवार और बन्दूक से काम लिया, लेकिन इन्सान इन्सान का मुकाबला करने के लिए बम बना रहा है। तो क्या इन्सान शेर से भी बदतर जानवर बन गया है? इन्सान एक बाजू तो इतना बुरा है कि शेर से भी बदतर हो सकता है और दूसरी बाजू कुछ ऐसे महापुरुष पैदा हुए हैं, जिन्होंने शेरों तक को अपना भाई समझकर उन्हें अपने वश कर लिया था। महापुरुषों की आत्माएँ एक ही जिस्म में कैदी होकर नहीं रहीं, वे सारे जिस्मों में फैल गयीं। इसलिए इन्सान को अब दोनों बाजू सामने रखकर सोचना चाहिए कि हे इन्सान! तेरी क्या हालत है? तू मनुष्य कहलाता है तो क्या तूने इस घटना पर मनन किया है? इन्सान के ही डर से तू करोड़ों रुपये का खर्चा शस्त्रास्त्रों पर कर रहा है। हिंदुस्तान और पाकिस्तान एक-दूसरे के डर से करोड़ों रुपयों का खर्चा कर रहे हैं और रूस और अमेरिका एक-दूसरे के डर से अरबों रुपयों का खर्चा कर रहे हैं। मैं आपसे डरता हूँ और आप मुझसे डरते हैं, यह सब क्या हो रहा है? क्या यह मनुष्य के लायक काम है? हम सबको इसपर चिंतन, मनन करना होगा कि क्या यह मनुष्य के लिए शोभनीय है? क्या इसमें इन्सान की शान, जीनत है? बोलने में तो हम बोलते हैं कि यह काम इन्सान की शान के लायक नहीं है, लेकिन लाचारी मानकर करना पड़ता है। इसके मानी यह हुआ कि मनुष्य मिट गया है। जहाँ मनुष्य मिट जाता है, वहाँ वह दूसरे जानवरों से बदतर बनता है, अधिक बुरा बनता है।

www.vinoba.in

जानवरों की बुराई करने की ताकत महदूद (सीमित) है और उनको भलाई करने की ताकत भी महदूद है। लेकिन इन्सान की भलाई या बुराई की ताकत महदूद नहीं है। वह चाहे जितनी भलाई या बुराई कर सकता है। कोई भी गाय गोश्त नहीं खा सकती, वह पाप नहीं करती। पाप करने की शक्ति उसमें नहीं है। कोई भी शेर फलाहार नहीं करेगा। उसमें पुण्य करने की शक्ति नहीं है। लेकिन मनुष्य फलाहार भी करेगा, गोश्त भी खायेगा और दूसरों को खिलाकर खुद फाका भी करेगा। वह बुरे से बुरा काम भी कर सकता है और अच्छे से अच्छा काम भी कर सकता है। वह बुरा भी बनेगा तो इतना हद दर्जे का बुरा बनेगा कि बुरा जानवर भी उसके सामने भला मालूम होगा और वह अच्छा बनेगा तो इतना अच्छा बनेगा कि देवता को भी लज्जित कर देगा। देवता भी उसके सामने झुक जायँगे।

कर्तव्यबोध

हे इन्सान, सोच, तेरा धर्म क्या है ? खाना-पीना ही तेरा धर्म नहीं है। सोचने के लिए तूने यह चोला पहना है। तू सोच कि किस चीज में व्यक्ति का, समाज का और दुनिया का भला है और सोचने पर जो तय हो, उसके मुताबिक काम कर तो तेरी आत्मा को तसल्ली होगी। सिर्फ प्राणी का जीवन जीने से तसल्ली नहीं होगी।

मैं चाहता हूँ कि आप सब सोचें कि मनुष्य का जीवन किस लिए है। हमारे पूर्वजों ने एक छोटे से जुमले में इन्सान का कर्तव्य बताया है। "त्यक्तेन भुंजीथाः" इस छोटे से वाक्य में इतना गहरा अर्थ भरा है कि ऐसा वाक्य शायद ही कहीं मिले। इसमें यह कहा गया है कि त्याग करके, त्यागपूर्वक भोग कर। खूब त्याग कर, फिर थोड़ा सा भोग भोग ले, फिर खूब त्याग कर, फिर थोड़ा भोग ले। इस तरह इधर और उधर खूब त्याग और बीच में थोड़ा सा भोग। चरखे से इधर सुन्दर कताई कर लो, उधर बीच में दो बूँद तेल देकर फिर से सुन्दर कताई कर लो। दो त्यागों के बीच एक छोटा सा भोग, यह एक मंत्र हमारे पूर्वजों ने हमारे जीवन के लिए दिया है।

जब यह जवाब मिलता है कि हमने कुछ नहीं किया तो इसके मानी यह नहीं कि भोग नहीं किया, बल्कि यह है कि त्याग नहीं किया। अगर कुछ थोड़ा त्याग किया होता तो लोग कहते कि हमने इतना काम किया। हमने इतना भोग भोगा, यह कहने में कहनेवाले को तसल्ली नहीं होती है। रोज पाँच तोले के हिसाब से तीन महीने में छह सौ तोला घी खाने का काम हमने किया, यह कहने में शर्म मालूम होती है। चरखे ने तेल खाया, यह कहने की चीज नहीं है। चरखे ने इतना सूत काता, यही कहने की चीज है। 'त्यक्तेन भुंजीथाः' यह चीज लोग समझे नहीं हैं, ऐसी बात नहीं है। लेकिन जीवन में इसपर अमल नहीं हो रहा है। जवानी जा रही है, बुढ़ापा छा रहा है, मृत्यु आ रही है, लेकिन मनुष्य कर्तव्य को दूर ढकेलता जाता है।

मैं कल यहाँसे जाऊँगा तो अब फिर दुबारा यहाँ आना मुमकिन नहीं होगा। इसलिए मैंने आपके सामने भूदान, ग्रामदान, शांति-सेना की बात न रखकर एक बुनियादी चीज रखी है। आप इस बुनियादी चीज पर गौर करें कि मनुष्य के नाते हमारा कर्तव्य क्या है। अन्तरात्मा के समाधान के लिए हमें क्या करना चाहिए। मनुष्य की विशेषता क्या है, यह सोचकर अपने जीवन में त्याग लाने की कोशिश करनी चाहिए। वह भी अकेले-अकेले नहीं, मित्र-मंडली के साथ। घर में कोई अच्छी चीज हो तो हम मित्रों को बुलाकर उनके साथ खाते हैं, वैसे ही यह त्याग भी कोई कड़वी दवा नहीं, मीठा आम है। अगर यह बात सुनने में मीठी मालूम होती है तो करने में कितनी मीठी मालूम होगी! जिसके श्रवण और कथन में ही इतना आनन्द है, उसके अमल में कितना आनन्द होगा, इसकी मिठास चखने से मालूम होगी। मैंने बचपन से जो मीठा आम खाया, उसे ही मैंने आज आपको चखाया है और कहा है कि भाइयो, इसका सेवन करोगे तो अमृतलाभ होगा। यहाँपर तीन भाइयों ने दान दिया है, इसके मानी है कि उन्होंने मीठा आम खाया, लेकिन यह काफी नहीं है। सबको खिलाकर खाइये। दान देनेवालों का चेहरा देखकर लोग पूछेंगे कि आप इतने खुश क्यों हैं ? तो देनेवाले जवाब देंगे कि हमने दान दिया, प्यार किया, इसलिए हम खुश हैं। इस तरह अपना चेहरा दिखाकर लोगों को त्याग करने के लिए ललचाओ।

यहाँपर कुछ बच्चे बैठे हैं। वे भी इस बात को समझ सकते हैं कि आखिर हमने यह चोला किसलिए पहना है। ध्रुव, प्रहलाद, नचिकेता आदि सब छोटे बच्चे ही तो थे। उन्होंने इस पर सोचा है तो इन बच्चों को भी इसपर सोचना कठिन नहीं मालूम होगा। बच्चे यह सोचें कि घर में माँ इतना काम करती है तो हमने उसको क्या मदद पहुँचायी ? उसकी क्या सेवा की ? क्या सिर्फ खाते रहने से हमारा कर्तव्य पूरा होगा ? नहीं ! दूसरों को मदद देने से हमारा कर्तव्य पूरा होगा। इस तरह बच्चे भी हमारी बात समझ सकते हैं। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

पामपुर (जम्मू-कश्मीर) ७-८-'५९

सर्वोदयवाले इन्सान का इन्सान के नाते खयाल करते हैं

यहाँपर खादी के जरिये गरीबों को रोटी देने का काम चल रहा है, यह देखकर हमें बहुत खुशी हुई। हमारे देश का एक अहम सवाल है बेरोजगारी। बेरोजगारी मिटाने के जितने इलाज हो सकते हैं, उन सबको आजमाना चाहिए। उसमें हाथ की कारीगरी एक बड़ी चीज है, जो कश्मीर की अपनी चीज है।

औरत-मर्द के काम का विवेक

यहाँपर जो काम चलते हैं, उनमें कई काम ऐसे हैं, जो बहनें कर सकती थीं। जो काम औरतें आसानी से कर सकती हैं, उसमें मर्दों को लगाना ठीक नहीं है। मर्दों के और औरतों के काम अलग-अलग रखे जायँ, वे एक दूसरे का काम न करें। मैं तो मानता हूँ कि रसोई का काम हर मर्द को आना चाहिए। लेकिन फिर भी समाज में कुछ कामों की तकसीम होनी चाहिए। जो ज्यादा मेहनत के काम हैं, वे मर्द ही कर सकते हैं। औरतें उन कामों को नहीं उठा सकती हैं। कम मेहनत के काम और जिसमें खूबसूरती का भी खयाल है, ऐसे कारीगरी के काम औरतें कर सकती हैं। इसलिए ऐसे काम मर्दों को दिये जाने से औरतें बेकार बनेंगी और उनका सारा दारोमदार मर्दों पर रहेगा। फिर खाविन्द मर जाने पर बेवा की बड़ी बुरी हालत होगी।

आज औरतों का एक-एक काम मर्द अपने हाथ में ले रहे हैं।

www.vinoba.in

सिलाई का काम पहले औरतें करती थीं, लेकिन जब से सीने की मशीन आयी, तब से वह काम मर्दों ने ले लिया। 'टेलरों' की दूकानें खड़ी हो गयीं। मैं उस मशीन के खिलाफ नहीं हूँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि वह काम औरतों के हाथ में रहे। एक जमाना था, जब बहनें बुनकाम करती थीं और भाई खेती करते थे। लेकिन अब औरतों के हाथ में सिर्फ कांडी, नाली भरने का काम रहा है। बुनाई का काम उनके हाथों से चला गया है। इसका नतीजा यह हुआ कि औरतों की हालत गुलाम के जैसी बन गयी है। चरखे को पालिश करने का काम औरतें कर सकती हैं, इसलिए ऐसे सब काम औरतों को दिये जायँ, आज जो मर्द ऐसे काम करते हैं, उनको हटाया न जाय, लेकिन नये काम शुरू करने हैं तो वे औरतों को दिये जायँ। औरतों के लिए घर से बाहर निकलना मुश्किल होता है। यहाँपर पर्दा भी है। इसलिए जो काम औरतें आसानी से कर सकती हैं, ऐसे काम उन्हें दिये जायँ।

कौमवाली बात तोड़ती है

आज कुछ सिख भाई हमसे मिलने आये थे। उन्होंने अपनी शिकायतें हमारे सामने रखीं। उनकी शिकायतों में से जो सही होंगी, उनको सरकार के सामने पेश करने की बात हमने कही। कश्मीर में अब तक २०-२५ जमातों के साथ हमारी अलग-अलग बात हुई है। हर जमात ने अपना-अपना मुतालबा पेश किया। सिया, पण्डित, शरणार्थी, सिख वगैरह सबने अपनी-अपनी बातें कीं। हमने कहा कि हम सिर्फ अपनी कौम की ही फिक्र करेंगे तो ताकतें टकरायेंगी और मसला हल नहीं होगा, इसलिए सारे गाँव को एक समझकर गाँव की मुसीबतें दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। एक कौम के भाइयों ने कहा कि मिनिस्टरी में हमारा कोई नुमाइन्दा नहीं है। मैंने कहा कि मैं इस बात को कत्तई नहीं मानता कि हर कौम का नुमाइन्दा मिनिस्टरी में रहे। कौमवाली बात देश की ताकत तोड़ने-वाली है।

कश्मीर में सारे कारकून मुख्तलिफ सियासी जमातों में बँटे हुए हैं। वे बाबा का कुछ काम कर देते हैं, लेकिन अपनी पार्टी को या खुद को उसका फायदा मिलेगा, इसलिए करते हैं। खालिस खिदमत करनेवाला कौन है? खिदमत करके उसमें से फायदा उठाने की कोशिश हो तो वह सच्ची खिदमत नहीं है। खिदमत के लिए ही खिदमत करनी चाहिए। या जैसे कुरानशरीफ में कहा है "वजुहुल्लाह" के लिए, अल्लाह के चेहरे के दर्शन के लिये खिदमत करनी चाहिए। पार्टीवाले काम करते हैं तो सिर्फ अपना काम बने, इतना ही उनका मकसद नहीं रहता, बल्कि दूसरे का काम बिगड़े, यह भी वे चाहते हैं। दूसरे की राह में रोड़े अटकाने का काम भी वे करते हैं। बीस लाख की आबादी-वाले कश्मीर-वैली जैसे छोटे से सूबे में इतनी अलग-अलग पार्टियाँ काम करती हैं और उनका एक-दूसरे पर भरोसा भी नहीं है! एक कुछ बात कहे और उसमें कुछ सच्चाई हो तो भी दूसरी पार्टीवाले उसे कबूल नहीं करेंगे। हर पार्टीवाले समझते हैं कि दूसरे जो बोलते हैं, उनकी तरफ तवज्जुह देने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि उनका कुल काम गलत है। जहाँ इस तरह चलता है, वहाँ तरक्की नहीं हो सकती।

पार्टियों की बात सर्वोदय के खिलाफ है। सर्वोदय में हम पार्टी, जबान, मजहब, जाति इन सबका खयाल नहीं करते, कुल का खयाल करते हैं। इन्सान का इन्सान के नाते खयाल करते हैं। कुल के भले की बात सोचते हैं। मैं समझता हूँ कि कश्मीर के लिए और हिन्दुस्तान के लिए इससे बेहतर चीज दूसरी कोई नहीं हो सकती है, इसलिए आप लोग अपनी-अपनी पार्टी छोड़कर इस काम में आयेंगे तो सबका भला होगा। ◆◆◆

स्वागत-प्रवचन

पठानकोट (पंजाब) २२-९-'५९

पूर्ण या परिपूर्ण? एक जीवन-दृष्टि

आज तो नुमाइन्दों के हाथ में सब कुछ है। मिलिटरी उनके हाथ में, व्यापार-व्यवहार उनके हाथमें, शिक्षण, समाज-सुधार, धर्म-सुधार म्यूजिक, साहित्य अकादमी—सब कुछ उनके हाथ में है। याने जीवन की कुल की कुल शाखाएँ हम उनके हाथ में सौंपते हैं। मगर वे ऐसे कौन अक्लवाले होते हैं, जो यह सब करने में समर्थ हों? उनके हाथ में सब कुछ सौंपकर लोग अपने हाथ में सिर्फ खाना-पीना रखते हैं। वह भी नुमाइंदों पर सौंपते तो ठीक होता। कौन-सा काम खुद करना, कौनसा मुनीम से करवाना, कौन-सा नौकर से करवाना, यह अक्ल सेठजी नहीं रखेंगे तो वे नाममात्र के सेठजी रहेंगे और सारी सत्ता मुनीम के हाथ में आयेगी। इसलिए हमने जो डेलिगेटेड डेमोक्रेसी चलायी है, जिसमें सारी की सारी सत्ता नुमाइन्दों को सौंपी जाती है, उसके बजाय हम यह करें कि मुख्य सत्ता अपने हाथ में रखकर चन्द बातें नुमाइन्दों को सौंपें।

को-ऑपरेशन बनाम ऑपरेशन

गाँव-गाँव के लोगों को इकट्ठा होकर अपना कारोबार चलाना होगा। विकेन्द्रित राज्य-रचना, विकेन्द्रित समाज-रचना और विकेन्द्रित अर्थ-रचना करनी होगी। ऊपर की सत्ता में सिर्फ जोड़ने की बात रहे, बाकी सारी सत्ता गाँव की हो। गाँव-गाँव स्वराज्य का एक छोटा नमूना हो। गाँव-गाँव में पूर्ण स्वराज्य लाया जाय। जैसा उपनिषद् के ऋषि गाते हैं—'पूर्णमदः पूर्णमिदम्'—यह भी पूर्ण है, वह भी पूर्ण है। इस तरह हमें जगह-जगह पूर्णों का नमूना पेश करना चाहिए। इन पूर्णों को जोड़ने-वाला एक परिपूर्ण भी रहे। आज तो अपूर्णों को जोड़कर पूर्ण बनाने की बात चलती है। शहरवाले लंगड़े हैं और गाँववाले अन्धे। लंगड़ा अन्धे के कन्धे पर बैठता है और मार्गदर्शन करता है। शहरवाले गाँववालों से कहते हैं कि तुम हमारी अक्ल से चलो। तुम्हारा और हमारा को-ऑपरेशन होगा। लेकिन इस को-ऑपरेशन में दोनों का ऑपरेशन चल रहा है। यह भी मारा जाता है और वह भी। इस तरह पंगुओं का, अक्षमों का, असमर्थों का, अपूर्णों का सहयोग करके पूर्ण बनाने की बात चलाना ठीक नहीं है। ऐसे अपूर्णों के सहयोग से किसी का समाधान नहीं हो सकता। [गतांक ११६ पृष्ठ ७१४ का शेषांश] ◆◆

अनुक्रम

१. सोचिये, मनुष्य के...	सांबा	१५ सितम्बर '५९	पृष्ठ ७१५
२. सर्वोदयवाले इन्सान का...	पामपुर	७ अगस्त '५९	,, ७१७
३. पूर्ण या परिपूर्ण?..	पठानकोट	२२ सितम्बर '५९	,, ७१८

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी